है। जैसे-जैसे बड़ी-बड़ी मशीनों का प्रयोग समाज में होने लगा है उसी रूप में सामाजिक सम्बन्ध भी परिवर्तित हो रहे हैं। लघु उद्योग धन्धों में काम करने वाले लोगों में सम्बन्ध प्राथमिक होता था तथा उनमें 'हम भावना' के साथ-साथ सहयोग भी पाया जाता था। लेकिन जैसे-जैसे बड़े उद्योग उन लघु उद्योग-धन्धों के स्थान पर आते जा रहे है वैसे-वैसे सामाजिक सम्बन्ध प्राथमिक से द्वैतीयक होते जा रहे हैं। इन बड़े उद्योग धन्धों में काम करने वालों में (भले ही वे पिता-पुत्र ही क्यों न हों) औपचारिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है और वे व्यक्तिगत आधार पर भी अपने पहले के सम्बन्धों को त्याग कर नये प्रकार से अंतःक्रिया करने लगते हैं। इसका सबसे अधिक प्रभाव व्यक्ति के दृष्टिकोण पर पड़ा है, अब वह व्यक्तिवादी अधिक होता जा रहा है। यह प्रमुख कारण है जिससे भारतीय सामाजिक संगठन परिवर्तित हो रहा है।

औद्योगीकरण के कारण व्यक्ति अब आशावादी होता जा रहा है। वह उन चीजों के निर्माण के बारे में भी सोच सकता है जिसे लोग असम्भव समझते थे। खेती-बारी का काम पहले ब्राह्मण इसलिए नहीं कर पाता था क्योंकि परम्परागत आधार पर हल चलाना उसके लिए वर्जित था लेकिन आज वही व्यक्ति ट्रैक्टर से अपना खेत जोतता है और खेती के काम के लिए उसे दूसरो पर आश्रित नही रहना पड़ता। ऐसे ब्राह्मण परिवार जिनका खेत बिना जोते-बोये परती पड़ा रहता था आज वे मशीनो का प्रयोग करके उसी खेती से समृद्ध होते जा रहे हैं। पहले किसान पानी के लिए प्रकृति पर आश्रित रहता था लेकिन आज उसके पास सिंचाई की मशीन होने के कारण वह आवश्यकतानुसार पौधो को समय-समय पर पानी देता रहता है। औद्योगीकरण ने नियतिवाद (भाग्यवादिता) तथा अलौकिक शक्ति की महत्ता को कम किया है। अब पुरुषार्थ की भावना लोगों मे जागृत हो रही है। यातायात तथा आवागमन के साधनों (रेल, मोटर, वायुयान) के निर्माण के कारण जहाँ दूरी की अवधारणा समाप्त हो रही है, वही पर छुआछूत तथा जाति-पाँति का भेदभाव भी समाप्त हो रहा है। अब सवर्ण एक अस्पृश्य के साथ-साथ ट्रेन मे बैठकर यात्रा करता है। उसे कई दिनो तक ट्रेन मे यात्रा करनी है अतः वह अन्य लोगों के बगल में बैठकर भोजन भी कर लेता है। इन व्यवहारों में परिवर्तन के कारण सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। प्रौद्योगिकी का विकास नगरीकरण की प्रक्रिया मे वृद्धि कर रहा है। अब लोग अन्य स्थानों से आकर उस स्थान पर बस जाते हैं जहाँ उद्योग को लगाया गया है। आवास की एक प्रबल समस्या खड़ी होती है। एक ही मकान मे विभिन्न आचार-विचार के लोग साथ-साथ रहते है। फलस्वरूप उनमें सहयोगात्मक सम्बन्ध नही रह पाते और परम्परागत व्यवस्था मे परिवर्तन स्वाभाविक हो जाता है। कुछ सामाजिक समस्याएँ जैसे वेश्यावृत्ति, बलात्कार, भिक्षावृत्ति, चोरी तथा मानसिक रोग की बहुलता बढ जाती है। इनके परिणामस्वरूप भी सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन देखने को मिलता है। रेडियो, टेलीफोन, सिनेमा, वेतार का तार तथा टेलीविजन आदि के आविष्कार ने सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। प्रौद्योगिकी के कारण रीति-रिवाजो, सामाजिक मूल्यों, राजनीतिक, धार्मिक तथा आर्थिक संस्थाओं में परिवर्तन हो रहा है जिसके कारण सामाजिक परिवर्तन अनिवार्य है। भारतीय सामाजिक परिवर्तन को तीव्र से तीव्रतर करने का श्रेय प्रौद्योगिकी को है।

(4) सांस्कृतिक कारक— lLdfr dk lc/k thou dh li.k xfrfof/k से होता है। अतः यदि thou dh xfrfof/k;k e ifjoru gk rk mll lkekftd परिवर्तन निश्चित सा हो जाता है। संस्कृति के अन्तर्गत हम भाषा, साहित्य, धर्म, सुख-सुविधा की वस्तुएँ, यहाँ तक कि वे सभी चीजें जो मानव समाज से सम्बन्धित हैं, रखते हैं। यदि इन तत्वों में परिवर्तन हुआ तो सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन अनिवार्य हो जाता है। संस्कृति स्वयं परिवर्तनशील होती है अतः उस पर आश्रित समाज में परिवर्तन भी अवश्यम्भावी हो जाता है। सामाजिक मूल्य जो व्यक्तियों के व्यवहारों को निर्देशित करते हैं, यदि परिवर्तित होते हैं तो उससे भी सामाजिक परिवर्तन होता है। भारतवर्ष में मूल्यों का संघर्ष आधुनिक सामाजिक परिवर्तन का मूल कारण कहा जा सकता है। यहाँ पुरानी पीढ़ी के लोग अब भी परम्परागत सामाजिक मूल्यों को धारण किये हुए हैं जबकि नयी पीढी के सदस्य नये मूल्यों को लेकर चल रहे हैं। मूल्यों में संघर्ष के कारण भी परम्परागत सामाजिक ढाँचा परिवर्तित हो रहा है। फैशन के क्षेत्र में आये दिन परिवर्तन हम देख सकते हैं। फैशन सामाजिक नियन्त्रण का एक साधन है। भारतीय स्त्रियाँ भी अब पैन्ट, लुंगी, टापलेस वस्त्र पहन रही हैं जबकि बडी-बूढी स्त्रियाँ अब भी पुराने ढंग से साड़ी पहनती हैं। ऐसी स्थिति में विचारों में समानता सम्भव नहीं और न ही पुराने प्रकार के वस्त्रों से नई पीढ़ी के लोगों को प्रभावित ही किया जा सकता है अतः बेमेल शोभनाचार के कारण भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आचार और आहार मे भी परिवर्तन स्पष्ट है। अब आधुनिक ब्राह्मण मांस, मदिरा, धूम्रपान का प्रयोग बेधडक कर रहा है जबकि उसके पिता और पितामह उसका विरोध करते आये हैं। पहले सवर्ण स्त्रियाँ मांस नहीं खाती थी—अब मांस खाने की बात तो दूर रही, वे खुली सड़क पर सिगरेट भी पीती हैं तथा रेस्टरां और क्लबों में शराब का भी प्रयोग करती है। यह स्थिति यद्यपि कुछ लोगों के विकास का मार्ग भी प्रशस्त कर देता है फिर भी इससे सामाजिक संगठन परिवर्तित हुए बिना नही रह सकता क्योंकि इसके पहले के लोगो का व्यवहार इस प्रकार का नही था। विवाह और परिवार में परिवर्तन और उसके प्रभाव का उल्लेख पिछले पृष्ठों पर किया गया है कि उनमें परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन के लिए किस प्रकार जिम्मेदार है।

संस्कृति के दो प्रधान पक्ष भौतिक और अभौतिक के प्रति समाज का दृष्टिकोण और झुकाव किस प्रकार का है इसका भी सामाजिक परिवर्तन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। भारतवर्ष में अब लोगों का झुकाव भौतिक संस्कृति की तरफ अधिक होता जा रहा है। इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं कि भारतवर्ष में भौतिक संस्कृति का बहिष्कार किया जाता रहा है। हमारे पुरुषार्थों में (जिनकी संख्या चार है) अर्थ को भी वही स्थान दिया गया था जो अन्य पुरुषार्थों को है। फिर भी लोग भौतिकवादी नही थे। लोगों का झुकाव अध्यात्म की ओर अधिक था। अन्य शब्दों में अभौतिक संस्कृति का महत्त्व समाज में अधिक था। लोग साहित्य, कला, संगीत, नृत्य आदि के विकास में अधिक तल्लीन रहते थे। जीवन का अन्तिम उद्देश्य 'मोक्ष' इन्हीं रास्तों से मिल सकता है इस प्रकार की धारणा लोगों में थी। लेकिन आज व्यक्ति का दृष्टिकोण भौतिकवादी अधिक है। वह अधिक से अधिक धन प्राप्त कर भौतिक सुख-सुविधा के साधनों मे वृद्धि करना

चाहता है। पश्चिमी समाजों की भाँति अब यहाँ भी जीवन का अन्तिम उद्देश्य 'अमरत्व की प्राप्ति' हो गया है जिसे धन के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है। 'मोक्ष' की प्राप्ति के लिए जिस प्रकार 'सर्वस्व त्याग' की बात अनिवार्य थी वह स्थिति अब अमरत्व के लिए आवश्यक नहीं। इस प्रकार संस्कृति के पहलू में परिवर्तन के कारण सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। नैतिकता की अवधारणा भी अब यहाँ बदल रही है। पहले यौन सम्बन्ध विवाह के पश्चात् ही स्थापित हो सकता था। लेकिन अब तो गर्भपात को भी वैधानिक संरक्षण प्राप्त है। स्त्री विवाह के पहले यदि गर्भवती हो गयी तो भी उसका सामाजिक बहिष्कार नहीं होगा। भारतवर्ष में भी अब पश्चिमी समाजों की भाँति एक स्त्री या पुरुष विवाह-विच्छेद के बाद अन्य से जितनी बार चाहे विवाह कर सकते हैं। यहाँ विवाह पहले एक धार्मिक कृत्य माना जाता था। स्त्री का दान (कन्यादान) दिया जा रहा है ऐसा लोगों का मत था। और चूँकि दान दी हुई चीज फिर दूसरे व्यक्ति को दी नहीं जाती इसी आधार पर दूसरे विवाह को अनुचित बतलाया जाता था। जो इसका उल्लंघन करते थे उन्हें अनैतिक और दुराचारी कहा जाता था। लेकिन आज यह स्थिति नहीं रही। व्यक्ति अपने स्वार्थ में किसी भी प्रकार का व्यवहार कर सकता है जिसके कारण आज सामाजिक सम्बन्ध तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। मिल्टन सिंगर ने लिखा है कि भारतीय सामाजिक संगठन में परिवर्तन का प्रमुख कारण सांस्कृतिक है। भारतीय गाँव जो मिट्टी के घरों तथा घासफूस की छतों से अधिकांशतया बना है, उनमें रहने वाले लोग यद्यपि उन वस्तुओं का उपभोग नहीं करते जो कस्बे या शहर के लोग करते हैं फिर भी ग्रामीण लोग अच्छे कपड़े तथा आभूषण को रखने की इच्छा रखते हैं। उनमें अधिक जमीन तथा अच्छे नस्ल के जानवर रखने की इच्छा होती है, बच्चों को शिक्षित करना तथा अपनी लड़कियों के लिए अच्छे वर की तलाश भी उनकी एक प्रमुख चाह होती है। अपने लिए न सही लेकिन अपने किसी रिश्तेदार के लिए वे नौकरी की तलाश करते हैं। बहुत सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि ग्रामीण लोगों की इच्छा अपनी स्थिति को सुधारने की होती है। वह अन्य चीजों की भी कामना करता है जो सार्वजनिक कल्याण के हैं जैसे स्कूल, सड़क, पीने के पानी की व्यवस्था आदि। आजकल भारतीय सामाजिक परिवतन का प्रमुख कारण अधिकाश लोगों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन है।